अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अंतर्गत हिंदी विभाग का अकादमिक सत्र

विषय : "भाषा के विविध रूप और अभिव्यक्तियाँ"

दिनांक : 27 मार्च, 2026

शोधार्थियों को मंच प्रदान करने हेतु भगिनी निवेदिता कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) द्वारा आयोजित “विकसित भारत में परिवर्तन के आयाम: भाषा, अर्थव्यवस्था, राजनीति और इतिहास का संगम” विषयक एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अंतर्गत हिंदी विभाग द्वारा “भाषा के विविध रूप और अभिव्यक्तियाँ” विषय पर एक अकादमिक सत्र आयोजित किया गया।

सत्र का शुभारंभ विभाग प्रभारी डॉ. रीता नामदेव द्वारा स्वागत वक्तव्य एवं अतिथियों के सम्मान के साथ हुआ।

सत्र की अध्यक्षता प्रो. मंजु मुकुल ने की। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. जय कौशल (सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया) तथा विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. शहाबुद्दीन (गुजरात विश्वविद्यालय) ने ऑनलाइन माध्यम से अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रो. जय कौशल ने अपने वक्तव्य में विकसित भारत के निर्माण में भाषा, विशेष रूप से हिंदी, के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. शहाबुद्दीन ने हिंदी पद्य के विकास में योगदान देने वाले साहित्यकारों का उल्लेख करते हुए हिंदी कविता के क्षेत्र में और कार्य की आवश्यकता पर बल दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. मंजु मुकुल ने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की संवाहक भी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाषा व्यक्ति की मनःस्थिति, विचारों एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

सत्र का संचालन श्री अर्चित सिंह, डॉ. ममता एवं डॉ. सुकेश द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया, जिससे सत्र सुव्यवस्थित एवं विचारोत्तेजक बना। इस दौरान नवोदित शोधार्थियों एवं वरिष्ठ विद्वानों के मध्य सार्थक संवाद स्थापित हुआ।

इस सत्र में कुल 22 शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 7 ऑनलाइन तथा 15 ऑफलाइन माध्यम से थे। विषयों में साहित्यिक अनुवाद, हिंदी सिनेमा की भाषा, मातृभाषा की भूमिका तथा विभिन्न कवियों के साहित्य में भाषाई प्रयोग शामिल रहे। प्रस्तुतियों में अनुभवजन्य एवं मानक विश्लेषण पर विशेष बल दिया गया।

प्रो. गीता कौशिक एवं प्रो. पूनम राठी ने प्रतिभागियों को मूल्यवान फीडबैक प्रदान किया।

कार्यक्रम का समापन विभाग प्रभारी द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

भगिनी निवेदिता कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
हिंदी विभाग द्वारा आयोजित
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
23 सितम्बर, 2025
हिंदी भाषा की समृद्धि : संभावनाएं और चुनौतियां

संभावनाएं और चुनौतियां